Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 5, Issue 3&4 - 2020, Pg. No. 6-8
Peer Reviewed Journal

Article

विद्यालयों में बढती छात्र अनुशासनहीनता एक जटिल समस्या

मधु कुमार भारद्वाज[1], योगिता नरूका[2]

[1]प्राचार्य, हितकारी सहकारी वूमन टी0टी0 कॉलेज, कोटा, राजस्थान, भारत।
[2]शोधार्थी, कैरियर पांइट यूनिवर्सिटी, कोटा, राजस्थान, भारत।

DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202006

I N F O

E-mail Id:
yogitanaruka529@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/0000-0003-4810-7483

Date of Submission: 2020-10-07
Date ofAcceptance: 2020-10-21

सारांश

किसी राष्ट्र के भावी निर्माता उसके बच्चे और किशोर बनते है। यें राष्ट्र की आशा के प्रतीक है। यें देश के भविष्य का भव्य भवन तभी बन पायेगे, जब इनकी नींव गहरी और सुदृढ होगी। विशाल प्रासाद, गगन चुंबी, अट्टालिकॉए तथा भव्य भवन जितने मनमोहक तथा आकर्षक होते है, उतनी ही उनकी नींव गहरी होती है। रेत का महल गिर जाता है। मानव तभी भव्य प्रासाद के समान निर्मित हो सकता है यदि विद्यार्थी जीवन की नींव दृढ होगी। माली अपने कठोर परिश्रम से उपवन को सुन्दर फूलों से सजाता है और मनुष्य सुन्दर गुणो को अर्जित कर जीवन को सुखमय बनाता है। ये गुण विद्यार्थी जीवन में ही प्राप्त किये जा सकते है। छात्र जीवन में अनुशासन बहुत आवश्यक है। अनुशासनयुक्त वातावरण बच्चों के विकास के लिए नितांत आवश्यक है। बच्चों में अनुशासनहीनता उन्हे आलसी व कमजोर बना देती है। इससे उनका विकास धीरे होता है। क्योकि अनुशासनहीनता जीवन को पतन की ओर ले जाती है। अनुशासहन विद्यार्थियों को शिक्षक कभी प्यार और सहयोग नही देते है। गुरूओं के प्रति अश्रद्वा रखकर वह कुमार्गगामी बनते है, अतः उसका जीवन समाज के लिए बोझऔर अभिशाप बन जाता है। वर्तमान युग में इस प्रकार की स्थिति देखी जा रही है। एक बच्चे के लिये यह उचित नहीं है। अनुशासन में रहकर साधारण से साधारण बच्चा भी परिश्रमी, बुद्विमान और योग्य बन सकता है। समय का मूल्य भी उसे अनुशासन में रहकर समय पर अपने हर कार्य को करना सीखाता है। जिससे अपने समय की कद्र से वह जीवन में कभी परास्त नहीं होता है। विद्यार्थी जीवन क्योकि भविष्य निर्माण की आधार शिला होता है। अतः अनुशासन के माध्यम से जीवन को व्यवस्थित कर विद्यार्थियों को उज्जवल भविष्य की ओर बढाना चाहिए।

मुख्य बिन्दु: अनुशासहीनता, प्रतीक, अट्टालिकॉए, पतन, कुमार्गगामी, अभिशाप

प्रस्तावना

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। किसी भी समाज के निर्माण में अनुशासन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अनुशासन ही मनुष्य को श्रेष्ठता प्रदान करता है तथा उसे समाज में उत्तम स्थान दिलाने में सहायता करता है। अगर हम देखे तो संसार में सभी ओर किसी न किसी प्रकार का अनुशासन देखने में आता है। उदाहरणार्थ – लघुत्तम चीटियों को पंक्तिबद्व चलता देखकर ही अनुशासन का ध्यान आ जाता है। पक्षीगण नीले आकाश में पंक्तिबद्व विहार करते है, सुर्य चन्द्र नक्षत्र आदि का उदयास्त भी अनुशासन के महत्व को ही सिद्व करता है। इन उदाहरणों के आधार पर हम कह सकते है कि अनुशासन मानव जीवन में ही नही प्रकृति में भी पुरी तरह समाहित है।

यों तों अनुशासन की प्रथम पाठशाला परिवार होता है, लेकिन सामाजिक अनुशासन का पाठ बालक विद्यालय मे ही पढता है। इसलिए विद्यालयों मे भी अनुशासन का महत्वपूर्ण स्थान होता है। कोई भी विद्यार्थी अनुशासन के महत्व को समझे बिना सफलता प्राप्त नही कर सकता है। क्योकि यदि विद्यार्थी में जीवन से ही नियमानुसार चलने की आदत पड जाए तो शेष जीवन की राहे सुगम हो जाती है। अनुशासन का महत्व आज ही नहीं कई वर्षो पूर्व

Copyright (c) 2020: Advanced Research Publications

से इसकी महत्ता देखने को मिलती है। प्राचीन व्यवस्था में विद्यार्थी जीवन को ब्रह्मचर्य आश्रम की संज्ञा दी गई है। प्राचीन व्यवस्था में शिष्य गुरूकुल में रहकर अनुशासित जीवन व्यतीत करता हुआ ज्ञान प्राप्त करता था। छात्र चाहे राज परिवार को हो, चाहे किसी साधारण परिवार का, सभी को अनुशासन के नियमो को समान रूप से स्वीकार करना पडता था। सभी को अनुशासनहीनता करने पर समान दण्ड दिया जाता था। किन्तु आज वर्तमान शिक्षा प्रणाली में दण्ड प्रावधान कों मनौवैज्ञानिकों के तर्क द्वारा समाप्त किया जा चुका है। यहॉ इस तथ्य को स्वीकार करते हुए कह सकते है कि यह बालक के लिए सही है। क्योकि बालको को भय व दण्ड की अपेक्षा प्रेम व स्नेह से ज्यादा अनुशासित रखा जा सकता है। किन्तु आज परिस्थितियॉ बदल चुकी है। प्राचीन समय की गुरू–शिष्य संबंध समाप्त होते जा रहे है। वर्तमान दोष युक्त शिक्षा प्रणाली के द्वारा शिक्षक छात्र सम्बंन्ध समाप्त होते जा रहे है। नैतिक गुणों का ह्रास होता जा रहा है। बढती हुई प्रतिस्पर्धा के दौर में माता–पिता, छात्र, राजनीतिज्ञ सभी अपनी स्वार्थ सिद्वि के कारण अनुशासनहीनता की और बढते जा रहे है, और इन सबका परिणाम एक जटिल समस्या बनती जा रही है बढती छात्र अनुशासनहीनता की समस्या हमारे देश में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के विद्यालयों में व्याप्त है। प्रतिदिन हमें ज्ञात होता है कि छात्र छोटी–छोटी समस्याओं पर कक्षाओं का बहिष्कार कर देते है, विद्यालय को नुकसान पहुॅचाते है। प्रत्येक देश में अलग–अलग परिस्थितियों के अनुसार अनुशासनहीनता के कारण होते है।

अनुशासनहीनता

यहॉ हम छात्र के अनुशासनहीनता के निम्न कारणों पर संक्षेप में प्रकाष डाल सकते है जो इस प्रकार है –

दोशपूर्ण शिक्षा प्रणाली

वर्तमान शिक्षा प्रणाली सर्वथा दोषपूर्ण है। यह विशेष रूप से बौद्विक विकास पर बल प्रदान करती है। अत एव एंकागी तथा जीवन से दूर है। शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् मात्र नौकरी के सिवा और कोई जीविकोपार्जन का साधन छात्रों को नजर नही आता। अंधकार भय भविष्य प्रदान करने वाली शिक्षा में उनका विश्वास नही रह पाता। अवसर आने पर वह विद्रोह कर उठते है। इस तरह अनुशासनहीनता का पनपना स्वाभाविक है।

आर्थिक कठिनाईयाँ

हम सभी अपनी राष्ट्रीय दरिद्रता से परिचित है। इस कारण हमारे देश के विद्यालयो की आर्थिक स्थिति ठीक नही है। विद्यालयो मे मकान, भूमि, उपस्कर सहायक शिक्षण उपादान व योग्य शिक्षको की कमी है। इतना ही नहीं समाज में शोषण का बाजार अभी भी गर्म है। फलस्वरूप विद्यालय में शोषित व शोषक दोनो वर्गो के छात्र पढते है और एक– दुसरे के प्रति घृणा व विद्रोह की भावना पालते है। इस कारण से भी अनुशासनहीनता का जन्म होता है।

राजनीति दलो का प्रभाव

देश में विभिन्न मतवाले अनेक राज–नीतिक दल है। इन दलो द्वारा अपनी स्वार्थ सिद्वि के लिए छात्रो का उपयोग किया जाता है। चुनाव प्रचार तथा अन्य प्रचार एंव संगठन कार्य में छात्रों का खुलकर उपयोग करते है। यही नहीं कभी–कभी तो ये दल छात्रो को हिसांत्मक कार्य के लिए भी प्रोत्साहित करते है। अनुशासनहीनता का आज यह एक बडा कारण है।

शिक्षको के नेतृत्व गुणो का प्रभाव

जैसे समाज में नैतिकता का अभाव है, वैसे ही अधिकांश शिक्षको में भी नेतृत्व गुणों का अभाव है। आज अपने आदर्शो को खोकर मात्र दो–चार प्राइवेट ट्यूशन के पीछे पागल है। इसका फल है कि शिक्षक का प्रभाव न तो समाज पर है, न ही छात्र पर। इन गुणों से हीन शिक्षक आज अनुशासन के विकास मे असमर्थ है।

शिक्षक छात्र संबंध का अभाव

आज विद्यालयों में छात्रो की संख्या अत्यधिक बढ गई है। एक–एक वर्ग में 60–70 छात्र ढूंस दिये जाते है। स्पष्ट है कि इस दशा में छात्र और शिक्षक का व्यक्तिगत संबंध असभंव है। अतः छात्र अभियंत्रित समूह के सदस्य होकर अनुशासनहीनता के कार्यो मे लग जाते है। आर्थिक लाभ, जातीयता, तथा पक्षपात ही शिक्षक–छात्र संबंध के आधार हो गये है। इस प्रकार अनुशासनहीनता का उदय होना स्वाभाविक है।

घर का दुषित वातावरण

सामान्यतः भारतीय परिवारों का वातावरण अत्यधिक दूषित होता है। अधिकांश परिवारो में शराब पीना, गाली गलौच करना, भद्दे आचरण करना, सामान्य बात है। ऐसे परिवारों से आने वाले छात्रों का अनुशासनहीन कोई बडी बात नही है।

छात्रो की समस्या की उपेक्षा

आज छात्रो की समस्या की उपेक्षा की जाती है अथवा उसे छोटी समझकर उसका समाधान नही ढुठां जाता फलस्वरूप समस्या कालांतर में विशाल हो जाती है तथा इसके विस्फोट से समाज का अस्तित्व ही समाप्त होने लगता है। उदाहरणतः शुल्कवृद्वि परीक्षा में प्रश्नो का स्तर, छात्र–आवास की समस्या को ही ले सकते है। इनकी उपेक्षा की जाती है और बाद में इन्ही के आधार पर बहुत बडा हिंसक एंव विनाशक आंदोलन खडा हो जाता है।

किशोरावस्था व युवावस्था की भावनाओं की अवहेलना

विद्यालयों में किशोरावस्था के छात्र होते है, उनकी भावनाऐ एंव शक्तियॉ अपार तथा कोमल होती है। उनका आदर करना हम नही जानते है। महाविद्यालयों में छात्र–छात्राओं का मिलना, बात करना स्वाभाविक है। उसे भी हम सहन नहीं करते। फलतः उनकी भावनाओं को ठेस लगती है और अनुशासनहीनता की भावना बढती है।

अनुशासनहीनता उपाय

वर्तमान में विद्यालयों व महाविद्यालयों में बढती अनुशासनहीनता को निम्न उपायों द्वारा दुर किया जा सकता है –

शिक्षा प्रणाली में सुधार व उसके उद्देश्यों में स्पष्टता

वर्तमान में मैकाले द्वारा सैद्वान्तिक शिक्षा के स्थान व्यवहारिक शिक्षा प्रदान करके छात्र अनुशासनहीनता को कम किया जा सकता है।

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202006

शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए जिससे छात्र अपने भविष्य को सवॉर सके। इस हेतु विद्यालयो में व्यावसायिक शिक्षा जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में भी महत्व दिया गया है।

शिक्षक का व्यवहार

शिक्षक कक्षा कक्ष में सभी छात्रों पर समान रूप से ध्यान देवे और सभी के प्रति समान व्यवहार रखते हुए छात्रों की समस्याओं का समाधान करे।

राजनीतिक पार्टीयों का प्रवेश निषेध

विद्यालयों के किसी भी कार्यक्रम में राजनीति से संबंधित व्यक्ति को न बुलाकर शिक्षाविदों, सामाजिक कार्यकत्तओं, समाज सुधारको को आंमत्रित करना चाहिए।

संक्रमण मनोवृत्ति का परित्याग

अध्यापक व अभिभावकों को अपनी संक्रीण मनोवृत्ति का परित्याग करके शिक्षण परिसर में छात्र एंव छात्राओं को आपस में बात करने, मिलने आदि की पूर्ण स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। इससे उनके दिलो–दिमाग पर कोई तनाव नहीं रहेगा और वे अनैतिक कार्यो की ओर उन्मूख नही होगे।

उचित निर्देशन प्रदान करना

संस्था प्रधान द्वारा समय–समय पर संगोष्ठी आयोजित करके या प्रार्थना स्थल पर उचित निर्देष देने चाहिए और समस्याओं का समाधान करना चाहिए।

उत्तरदायित्व की भावना का विकास

विद्यालय में विभिन्न विकासात्मक कार्यो में छात्रो का भरपुर सहयोग लेना चाहिए जिससे वे विद्यालय को अपना समझेगे और कोई अहित कार्य नही करेगे।

सीमित प्रवेश व्यवस्था

विद्यालयो में विभिन्न कक्षाओं में छात्रो को प्रवेश देते समय विद्यालय में उपलब्ध मानवीय व भौतिक संसाधनों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

परीक्षा प्रणाली में सुधार

आज परीक्षा प्रणाली मानसिक स्मरण की वस्तु है। वह मुख्यतः निवंधात्यक बनकर रह गई है। इससे चोरी व पक्षपात होते है, अतः परीक्षा प्रणाली को वस्तुनिष्ठ बनाया जाए, इससे मूल्याकंन विश्वसनीय होगा, रटने का प्रश्रय नही मिलेगा पक्षपात की गुंजाइश नही रहेगी और अनुशासन मजबुत होगा।

मार्गदर्शन की व्यवस्था

छात्रो का मार्गदर्शन हेतु प्रशिक्षित एंव योग्य मनोविज्ञान शिक्षक का होना अत्यावश्यक है। इनकी सहायता से छात्र अपना सही अध्ययन मार्ग चुनने में सफल होगे। उपर्युक्त उपायो के अलावा अनुशासनहीनता की समस्या का परिस्थितियों के अनुसार अन्य उपाय भी किये जा सकते है।

उपसंहार

वर्तमान में भारत में नही सम्पूर्ण विश्व का समाज अनुशासनहीनता की समस्या से ग्रस्त है। विद्यालयों में छात्रो की अनुशासनहीनता तो इन सबका एक छोटा सा रूप है। क्योकि हम देखते है कि आज हमारे चारो ओर चाहे वह विद्यालय हो, सरकारी कार्यालय हो, राजनीतिज्ञ हो, सभी अनुशासनहीनता का उदाहरण है। सभी अपने स्वार्थ को पुरा करने मे लगे हुए है। कर्त्तव्यपरायणता, नैतिकता, संस्कार, मूल्य का तो पूरी तरह से ह्रास हो गया है। माता–पिता तक अपने बच्चो के कर्त्तव्यों की ओर से विमुख हो चुके है। जो संस्कार बालक को अपने अभिभावकों से मिलने चाहिए, उनसे वंचित हो गये है। अगर हमारे समाज के वरिष्ठ जन ऐसी अनुशासनहीनता से ग्रस्त है तो फिर हम उन छात्रों को कैसे दोष दे सकते है। क्योकि बालक तो बगीचे के उस फुल के समान है। जिसे माली स्वंय अपनी देखरेख में बडा करता है। आज समाज में फैले इस अनुशासनहीनता को समाज का प्रत्येक व्यक्ति, समाज–सुधारक, राजनीतिज्ञ, अभिभावक, विद्यालय सभी ईमानदारी, कर्त्तव्यपरायणता व अनुशासित होकर स्वंय आगे बढे तो इस समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है। इसके लिए सामूहिक प्रयासो की आवश्यकता है। ताकि छात्र उज्जवल भविष्य की ओर अग्रसित हो सके। अनुशासित होने का सबसे बडा लाभ यह है कि इससे छात्र का ही नहीं बल्कि राष्ट्र की उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

सन्दर्भ सूची

1. बोर्ड ऑफ एजुकेशन रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्ली, प्रिटंर हॉल ऑफ इण्डिया प्रा0 लि0 पृ0 सं0 12। 2006।
2. डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन मनोविज्ञान व शिक्षा में प्रयोग व परिक्षण, आगरा, एच.पी.भार्गव, पृ0 सं0 151। 2006।
3. गुड सी.वी। डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन (सेकेंड एडीशन) फाई डेल्टा न्युर्याक।959।
4. त्रिपाठी एम.के. अप्रकाशिक शोध ग्रन्थ, गोवाहटी। 2001।
5. बैनर्जी एस.। इनडिसीप्लीन ए सर्वे ऑफ स्टुडेन्टस ओपिनियन'' जनरल ऑफ साईकोलॉजीकल रिसर्च। 2004।
6. रसल अधिगम एंव विकास के मनोसामाजिक आधार मेरठ इन्टर नैशलन पब्लिशिंग हाउस, पृ0सं0 268। 2005।
7. टी.पी. नन, मनोवैज्ञानिक अनुसंधान एंव मापन, आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन, तृतीय संस्करण, पृ0सं0 21।

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202006